अथ द्वितीय विजयमेरु पूजा

(गीता छन्द)

खंड धातकी पूर्व दिश कौ विजयमेरु सुथान है।
तिस ऊपरे जिन धाम षोडश अकीर्तम पुन धाम है।
इन आदि और कुलाचलादिक मेरु सम्बन्धी सही।
जिन थान कूं यहाँ थापि पूजूं भक्ति तें पुन की मही॥१॥

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक

(अडिल्ल छन्द)

नीर निरमलको गंग धार को लाइये।
सुन्दर झारी घालि हरष बहु पाइये।
जनम मरन दुख हरन महा थुति गाय जी।
पूज्य जिनालय विजयमेरु जुत पाय जी॥१॥

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

चन्दन बावन अगर गंध ले सार जी।
निरमल नीर घसाय आप कर धार जी।
भौ तपरोग मिटावन कौ गुन गाय जी।
पूज्य जिनालय विजयमेरु जुत पाय जी॥२॥

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं नि०

अक्षत उज्वल खंड बिना ही लाइयौ।
प्राशुक जलतें धोय शुद्ध करवाइयौ।

थान अखय का लोभ धार मैं आय जी।
पूज्य जिनालय विजयमेरु जुत पाय जी।।३।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

फूल कनक चांदी के प्राशुक लेय जी।
तिनको हार बनाय शोभजुत जेय जी।
कामदहन के काज भक्त धर आय जी।
पूज्य जिनालय विजयमेरु जुत पाय जी।।४।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनचैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

नाना रस नैवेद्य आदि मोदक सही।
कीनें शुभ आचार सहित अब इस मही।
भूखरोग खय काज आज हम आय जी।
पूज्य जिनालय विजयमेरु जुत पाय जी।।५।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनचैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

मणिमय दीपक लेय जोत परकाश जी।
कंचन पातर धार होय प्रभु दास जी।
मेटन मिथ्या ध्वांत पूजने आय जी।
पूज्य जिनालय विजयमेरु जुत पाय जी।।६।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनचैत्यालयेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

धूप मनोज्ञ बनाय गंध दश डार जी।
खेवन आयौ अगिन माहि थुति धार जी।
कर्म दाह फल चाह और नहीं आय जी।
पूज्य जिनालय विजयमेरु जुत पाय जी।।७।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनचैत्यालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

श्रीफल लौंग बदाम सुपारी सार जी।
खारक आदि अनेक और फल धार जी।

कारण शिवफल लोभ आप पै आय जी।
पूज्य जिनालय विजयमेरु जुत पाय जी।।८।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

नीर गंध तंदुल पुह चरु ले दीप जी।
धूप फला विध आठ अरघ शुभ टीप जी।
नाना सुख के काज, पाप खयदाय जी।
पूज्य जिनालय विजयमेरु जुत पाय जी।।९।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं नि०

प्रत्येक अर्घ

(जिनजंपि की चाल)

विजयमेरु की भौम में बन भद्रसाल सुखदाई जी।
चार जिनालय मणिमई ते पूजों अर्घ बनाई जी।।
मन वच भक्ति लगाय कैं।।१।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिभद्रसालवनस्थचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

नन्दन वन या ऊपरै तिस महिमा अधिक विचारो जी।
विजयमेरु शुभ स्थान है यह तीरथ निरमल जानो जी। मन०

ॐ ह्रीं विजयमेरौ:नंदनवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

इस ऊपर वन सोम है तहाँ देव विद्याधर जावें जी।
चारि जिनालय हैं तहाँ ते पूजों मैं अघ ढावें जी।
विजयमेरु तीरथ सही तहाँ जिन थल मुनि शिव पावें जी। मन०

ॐ ह्रीं विजयमेरौ:सौमनसवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

पांडुक वन सब ऊपरे जहाँ रतनमई जिन गेहा जी।
चार जिनालय जिन कहे ते पूजों अरघ समेहा जी।

विजयमेरु तीरथ सही तहाँ जिन थल मुनि शिव पावें जी।
मन वच भक्ति लगाय कैं।।४।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुपांडुकवनसम्बन्धिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।४।।

विजयमेरु दक्षिण दिशा जम्बू वृक्ष बहु विस्तारो जी।
तापै इक जिन गेह है सो पूजों अरघ संबारौं जी।
विजयमेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग नित सारो जी।। मन०

ॐ ह्रीं विजयमेरुदक्षिणदिशस्यजम्बूवृक्षस्यैकजिनालयायाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।५।।

उत्तर दिश इस मेर की सालमली वृक्ष जानौ जी।
तापै जिन मन्दिर सही ते पूजों अरघ चढ़ानौं जी।
विजयमेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानौं जी।। मन०

ॐ ह्रीं विजयमेरोत्तरदिशाया: शाल्मलिवृक्षस्यैकजिनालयायाऽर्घं निर्व० ।।६।।

विजयमेरु गजदन्त पै जिन थानक हैं पुन्य दाई जी।
सो चारों थल वंदिये ले अरघ मगा हरषाई जी।
विजयमेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानौं जी।। मन०

ॐ ह्रीं विजयमेरुश्चतुर्गजदन्तोपरि चतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।७।।

विजयमेरु दक्षिण दिसा गिरि तीन कुलाचल सारो जी।
तिन पै जिन थानक सही ते पूजों हरष अपारो जी।
विजयमेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानौं जी।। मन०

ॐ ह्रीं विजयमेरुदक्षिणदिशाया: त्रिकुलाचलेषु त्रिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्व० ।।८।।

उत्तर दिस इस मेरु की गिर कहे कुलाचल तीनों जी।
तिन पै जिनमन्दिर सही ते पूजों भक्ति नवीनों जी।
विजयमेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानौं जी।। मन०

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्ध्युत्तरदिशाया:त्रिकुलाचलेषु त्रिजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं नि० ।।९।।

दक्षिण दिस वेताढ है गिर विजयमेरु तें जानों जी।
तिन पै जिन थल विन किये ते पूजौं हरष बढ़ानो जी।

विजयमेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानौं जी।
मन वच भक्ति लगाय कैं।।१०।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुदक्षिणदिश्येकविजयार्धोपरि जिनचैत्यालयार्घं निर्व० ।।१०।।

विजय महा गिरि मेरु की विजयारध पश्चम सोला जी।
तिन पै इक इक जिन भवन ते पूजैं अघ होय खोला जी।
विजयमेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानौं जी।। मन०

ॐ ह्रीं विजयमेरोः पश्चिमदिशायां षोडशविजयार्धपर्वतेषु षोडशजिन-चैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।११।।

विजयमेरु की उत्तरै विजयारध एक सुथानौं जी।
तापै इक जिन थान है सो पूजौं कर सन्मानौं जी।
विजयमेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानौं जी।। मन०

ॐ ह्रीं विजयमेरोरुत्तरदिश्येकविजयार्धोपर्येकजिनचैत्यालयायाऽर्घं निर्व० ।।१२।।

पूरब दिस इस मेर की विजयारध महा गिरिंदा जी।
तिनपै षोडश जिन भवन पूजैं मिटहै अघ फंदा जी।
विजयमेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानौं जी।। मन०

ॐ ह्रीं विजयमेरोः पूर्वदिशि षोडशविजयार्धेषुषोडशजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्व० ।।१३।।

पूरब दिस इस मेर की वसु परवत सार वक्ष्यारो जी।
तिनपै जिन थल आठ हैं ते पूजौं मन वच धारो जी।
विजयमेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानौं जी।। मन०

ॐ ह्रीं विजयमेरोः पूर्वदिश्यष्टवक्ष्यारेष्वष्टजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्व० ।।१४।।

पच्छम विजय सुमेर की आठ वक्ष्यार सुजानौ जी।
आठ तिनौं पै जिन भवन ते पूजौं अरघ सुआनौ जी।।
विजयमेरु तीरथ सही पूजैं सुर खग यह थानौं जी।।

ॐ ह्रीं विजयमेरोः पश्चिमदिष्यष्टवक्ष्यारगिरिष्वष्टजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।।१५।।

(अडिल्ल छन्द)

विजयमेरु संग इस प्रकार वन चार जी।
गजदन्ता वृक्ष दोय कुलाचल सार जी।।
विजयारध चौंतीस वक्ष्यार सुजानिए।
इनपै जे जिन थान जजौं अर्घ आनिए।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।१६।।

अथ जयमाला

(दोहा)

विजयमेरु दूजो सही, जान अकिरतम थान।
या सम्वन्ध जे जिन भवन, पूजैं सुर खग आन।।१।।

(मुणयणाणंद की चाल)

मेरु विजया विषैं थान जिनके सही।
बिम्ब तिनमें जिसे देव जिन छवि कही।।
दृष्टि नासा दिये ध्यान पदमासना।
देखते नाश होय पाप की वासना।।२।।

शान्ति मुद्रा बिना राग सुखदाय जी।
मानु अब दिव्यधुनि खिरैगी आय जी।।
इन्द्र से दीन होय करैं अरदासना।
देखते नाश होय पाप की वासना।।३।।

ध्यान में मुनि जिनबिम्ब जे ध्याय हैं।
आपनौ रूप ऐसो कियौ चाय हैं।।
जोय जिन ध्यान नहीं होय जग आसना।
देखते नाश होय पाप की वासना।।४।।

भक्त मन मोहनी देह जिनराय की।
देखते बढ़ै उर राग सुखदाय जी।।

मोक्ष तिय नित चहै रूप तिन भासना।
देखते नाश होय पाप की वासना।।५।।

देखते मूर्ति जिनराय सुध आय है।
सोभ अति सोहनी काय जिनराय है।।
लखै शुभ ध्यान दूर ध्यान की वासना।
देखते नाश होय पाप की वासना।।६।।

आदि इनको घनी ऊपमा दाय जी।
अकिरतम देव जिनबिम्ब में पाय जी।।
तीर्थ मंगल करा और समता सना।
देखते नाश होय पाप की वासना।।७।।

बिम्ब सब रतनमय तजे बहु धार जी।
जोति तिनकी कनै दबै शशि सार जी।।
कनकमय गेह जिन धरें परकासना।
देखते नाश होय पाप की वासना।।८।।

बड़े बिस्तार जिन थान को जानिए।
कोटि त्रय वेष्टि रचना घनी मानियै।।
बाग बन महल वापी सुदुख नाशना।
देखते नाश होय पाप की वासना।।९।।

दूसरे मेरु विजय तनी विधि कही।
वरनतै सोभ पुन्य रास भव्यनि लही।।
तीर्थ सिद्धक्षेत्र मुनि करै कर्म नाशना।
देखते नाश होय पाप की वासना।।१०।।

विजय यह मेरु बहु घेर में जानिए।
देव खग गमन तहँ सदा तिस थानिए।।
जजैं ते जाय हम करैं यहँ उपासना।
देखते नाश होय पाप की वासना।।११।।

(दोहा)

विजय मेरु गुनमाल को, जपै जाय भव कोय।
ताको तीरथ लाभ है, दिये भाव फल होय।।१२।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिजिनालयेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।।१२।।

इति विजयमेरु पूजा समाप्त

अथ तृतीय अचलमेरु पूजा

(वेसरी छन्द)

मेर अचल सनबन्धि जिनाला। सो पूजै सुर खग गुनमाला।
हम तो सकतहीन हैं भाई। तातैं यहां थापि भावन भाई।।१।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक

(अडिल्ल छन्द)

नीर निरमलो कनक पात्र धर लाय जी।
उज्ज्वल सार सुगंध मनोहर आय जी।
अचलमेरु सनबंध जिते जिन थान जी।
पूजौं भक्ति बढ़ाय फलै भव हानि जी।।१।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

चन्दन चारु सुगंध अगर मिलवाय जी।
प्राशुक पानी लाय घस्यो थुति गाय जी॥
अचलमेरु सनबंध जिते जिन थान जी।
पूजौं ता फल भव आताप मिटाव जी॥२॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं नि०

अक्षत अखंड अनूप गंध धारी सही।
धवल रंग मुक्ताफल से पुन की मही॥
अचलमेरु सनबंध जिते जिन थान जी।
पूजों ता फल अक्षय पद कों पाय जी॥३॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

फूल कल्पवृक्ष सार गंध दायक सही।
कंचन चांदी फूल आपने कर मही॥
अचलमेरु सनबंध जिते जिन थान जी।
सो पूजौं पद मदन तनों खय जानि जी॥४॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

नाना रस सुभ लाय कियौ नैवेद जी।
मोदक आदि बनाय लिए निरवेद जी॥
अचलमेरु सनबंध जिते जिन थान जी।
सो पूजौं फल भूख तनी होय हानि जी॥५॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

दीपक मणिमय सार जोति तम नासना।
कनक पात्र धर लाय करौं थुति भासना॥
अचलमेरु सनबंध जिते जिन थान जी।
सो पूजौं फल होय मिथ्यातम नास जी॥६॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि०

अगर चन्दन आदि जो दशधा धूप जी।
अगनि मध्य खेऊँ निज हौन अरूप जी॥
अचलमेरु सनबंध जिते जिन थान जी।
सो पूजौं फल कर्म दहै शिव जाय जी॥७॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति०

श्रीफल लौंग बदाम सुपारी सार जी।
आदि इने अनि आनि फला सुखकार जी॥
अचलमेरु सनबंध जिते जिन थान जी।
सो पूजौं फल मोक्ष हौनकौ जानि जी॥८॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति०

जल चंदन क्षत पुष्प चरू दीपक सही।
धूप और फल आठ लेय अरघे टही॥
अचलमेरु सनबंध जिते जिन थान जी।
सो पूजौं फल अमल हौन हित आनि जी॥९॥

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्योऽनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ

(चौपाई)

अचलमेरु की भौम मँझार। भद्रसाल जानौं बनसार।
ताके मध चव जिनवर थान। ते हौं पूजौं शक्त प्रमान॥१॥

ॐ ह्रीं अचलमेरोः भद्रसालवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दन नाम महा बन सोय। अचलमेरु के ऊपर जोय।
ताके मांहिं चार जिनथान। तेऊ पूजों शक्त प्रमान॥२॥

ॐ ह्रीं अचलमेरोः नंदनवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु के ऊपर सोय। सोमनस नाम वन अदभुत जोय।
तामैं चार जिनालय जान। ते हों पूजों शक्त प्रमान।।३।।

ॐ ह्रीं अचलमेरोः सौमनसवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पांडुक वन सब ऊपर जोय। अचल मेरु सनबंधी सोय।
ता विच चार जिनालय जान। ते हू पूजों शक्त प्रमान।।४।।

ॐ ह्रीं अचलमेरोः पांडुकवनसम्बन्धिचतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु की दक्खिन दिशा। जम्बू वृच्छ ऊपरे लसा।
एक जिनेसुर जी का थान। सो ही पूजों शक्त प्रमान।।५।।

ॐ ह्रीं अचलमेरोः दक्षिणदिशस्थजम्बूवृक्षस्यैकजिनचैत्यालयाय अर्घं निर्व०

अचलमेरु की उत्तर सोय। सालमली वृछ मणमय जोय।
तापै एक जिनसुर थान। सोहू पूजों शक्त प्रमान।।६।।

ॐ ह्रीं अचलमेरोरुत्तरदिशायाः शाल्मलिवृक्षोपर्य्येकजिनचैत्यालयायार्घं नि०

अचलमेरु के चार बखान। गजदन्ता परवत हित दान।
तिन पै चार जिनालय जान। ते हू पूजों शक्त प्रमान।।७।।

ॐ ह्रीं अचलमेरोश्चतुर्गजदंतोपरि चतुर्जिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु की दक्षिन सोय। तीन कुलाचल गिरि सुभ जोय।
तिन पै तीन जिनालय जान। ते हू पूजौं शक्त प्रमान।।८।।

ॐ ह्रीं अचलमेरोः दक्षिणदिशि त्रिकुलाचलेषु त्रिजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घं नि०

अचलमेरु उत्तर दिस जाय। तीन कुलाचल परवत पाय।
तिन पै तीन जिनालय जान। ते हू पूजों शक्त प्रमान।।९।।

ॐ ह्रीं अचलमेरोरुत्तरदिशि त्रिकुलाचलेषु त्रिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु के पूरब जाय। आठ वक्ष्यार महागिर पाय।
तिन इक इक पैं हैं जिन थान। ते हौं पूजों शक्त प्रमान।।१०।।

ॐ ह्रीं अचलमेरोः पूर्वदिश्यष्टवक्ष्यारगिरिष्वष्टजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पच्छम अचल मेरु को जोय। आठ वक्ष्यार बड़े गिर सोय।
तिन पै आठों ही जिन थान। ते हू पूजों शक्त प्रमान।।११।।

ॐ ह्रीं अचलमेरो: पश्चिमदिश्यष्टवक्ष्यारेष्वष्टजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल मेरु की पूरब जोय। हैं विजयारध षोडश सोय।
तिन पै षोडश ही जिनथान। सो हों पूजों शक्त प्रमान।।१२।।

ॐ ह्रीं अचलमेरो: पूर्वदिशि षोडशविजयार्धेषु षोडशजिनालयेभ्योऽर्घं नि०

अचल मेरु की दक्षिण भौम। विजयारध गिर है एक सोम।
ता ऊपर इक जिन को थान। सो हू पूजों शक्त प्रमान।।१३।।

ॐ ह्रीं अचलमेरो: दक्षिणदिश्येकविजयार्धोपर्येकजिनालयायार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु अचल की पश्चिम जेइ। षोडश विजयारध गिर लेइ।
तिन सब पै इक इक जिनथान। सो हो पूजों शक्त प्रमान।।१४।।

ॐ ह्रीं अचलमेरो: पश्चिमदिशि षोडशविजयार्धेषु षोडशजिनचैत्यालयेभ्यो अर्घं नि०

अचल मेरु की उत्तर धरा। एक खगाचल पर्वत परा।
तापै एक जिनालय जान। सो हौं पूजों शक्त प्रमान।।१५।।

ॐ ह्रीं अचलमेरोरुत्तरदिश्येकविजयार्धस्यैकजिनालयायार्घं नि०

खंड धातकी दक्षिण जाय। इष्वाकार एक गिर पाय।
ता पै एक जिनालय मान। सो हौं पूजों शक्त प्रमान।।१६।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडदक्षिणदिक्ष्यक्ष्वाकारपर्वतोपर्येकजिनालयायार्घं नि०

उत्तर दिश खंड धातकि माहि। इष्वाकार मध्य में पाहि।
ता पै एक जिनालय मान। सो मैं पूजौं शक्त प्रमान।।१७।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडस्योत्तरदिश्यक्ष्वाकारपर्वतोपर्येकजिनालयायार्घं नि०

ऐसे अचल मेरु विध जोय। सो सो धरा जिनालय सोय।
ते हौं अरघ लाय हरषाय। पूजों सब जिन थल थुति गाय।।१८।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसम्बन्धिजिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाल

(दोहा)

अचल मेरु पै जिन न्हवन, होय मुनी शिव जाय।
तातैं तीरथ निरमलौ, मैं पूजौं गुन गाय॥१॥

(वेसरी छन्द)

अचल मेरु सन्बन्धि जानौं। हैं जिन थान सु कहौ बखानौं।
अरु पर्वत गिर याकी लारा। सुनतें जीव लहैं पुन सारा॥२॥

जहाँ जहाँ जिनमन्दिर होई। सो सो थान कहौं सुनि सोई।
चव्वन षोडश जिन थल धारा। सुनतें जीव लहै पुन सारा॥३॥

चार कहे गजदन्ता भाई। इन पै चव जिन गेह बताई।
सो भी रतनमई शुभकारा। सुनतें जीव लहै पुन सारा॥४॥

जम्बू सालमली वृछ जानौं। इन जुग पै जुग जिन थाल मानौ।
तहँ भी सुर खग का पैसारा। सुनतें जीव लहै पुन सारा॥५॥

षोडश गिर वक्ष्यार हैं भाई। तिनपै षोडश जिन गृह पाई।
तहाँ जाय पूजौं शुभ धारा। सुनतें जीव लहै पुन सारा॥६॥

विजयारध चौंतीसा जानौ। ते सब चांदीमय तन थानौ।
तिन पै चौंतिस जिन थल भारा। सुनतें जीव लहै पुन सारा॥७॥

इक्ष्वाकार दोय गिर जानौ। इनपै दोय जिनालय मानौ।
तहँ सुर खग पूजें हितकारा। सुनतें जीव लहै पुन सारा॥८॥

इत्यादिक जिनमन्दिर भाई। सबै थान जिय को सुखदाई।
ये सब तीरथ थान अपारा। सुनतें जीव लहै पुन सारा॥९॥

जो पूजै परतछ तहँ जाई। ताके उदय पुन्य होय भाई।
हम परोक्ष गुन गावें प्यारा। सुनतें जीव लहै पुन सारा॥१०॥

हम यहाँ पूज्य भावना भावैं। ताही कर भव सफल करावैं।
गावैं राग धार गुन भारा। सुनतें जीव लहै पुन सारा।।११।।

(दोहा)

खंड धातकी पछम दिस, अचल मेरु शुभ धाम।
ता संबंध तीरथ सबै, जजौं जिनेश्वर ठाम।।१२।।

ॐ ह्रीं धातकीपश्चिमदिश्यचलमेरुसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्यो पूर्णार्घं नि०

(इति अचलमेरु पूजा समाप्त)

अथ चतुर्थ मन्दिरमेरु सम्बन्धि जिनालय पूजा

(मुणयणाणंद की चाल)

अर्घ यह कर धरा पूर्व दिसा जानिए।
मेर चौथा भला मंदर सुख मानिए।
ता सम्बन्धी जिते जिन थानका हैं सही।
सो सकल थापि इहाँ जजौं पुन्य की मही।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिषोडशजिनालयस्थजिनबिम्बसमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।